आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे आते हुए ईश्वरीय शक्तियों से स्वयं को सजाने की आवश्यकता है। आधुनिक संसाधनों का उपयोग करते हुए उसके प्रभाव से मुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए।

भारतीय समाज में महिलाओं को वक्त की रफ्तार में बने रहने के लिए कौन-कौन सी महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देने की ज़रूरत है?

नारियों के लिए हर वक्त चुनौतियों से भरा होता है। अपनी सुरक्षा, परिवार का उत्थान, श्रेष्ठ समाज व श्रेष्ठ मानव का निर्माण मुख्य दायित्व है। अपने को आन्तरिक रूप से शक्तिशाली बनाकर लोगों का प्रेरणास्रोत बनकर रहना है। ईश्वर का सानिध्य उनके लिए सबसे मज़बूत पक्ष है, क्योंकि ईश्वरीय शक्ति से उन्हें आत्मबल व आत्म-सम्मान मिलता रहेगा, फिर सामने कैसी भी चुनौती आए, उसमें वे सफल रहेंगी।

नारी सशक्तिकरण के लिए सबसे ज़रूरी बात क्या है?

वैसे तो आजकल केवल नारी को ही नहीं, बल्कि पूरी मानव सृष्टि के सारे लोगों को स्वयं के बारे में जानने की आवश्यकता है। जब तक हम स्वयं के बारे में नहीं जानेंगे, तब तक दूसरों के बारे में नहीं जान सकते हैं। नारी सशक्तिकरण के लिए सबसे पहले माताओं-बहनों को अपने अन्दर छिपी उस अपार शक्ति को पहचानने और उसको जागृत करने के लिए सर्व शक्तियों के सागर परमपिता परमात्मा से खुद को जोड़ने की ज़रूरत है, ताकि हमेशा ईश्वरीय शक्ति मिलती रहे।

आपके विश्वविद्यालय में महिलाओं के आत्मसम्मान व स्वावलंबन के लिए किस तरह का अभियान चलाया जा रहा है?

हमारी संस्था केवल महिलाओं को ही नहीं, बल्कि हर उम्र, हर वर्ग तथा हर धर्म के लोगों की है। इस संस्था का लक्ष्य लोगों को रोजगार के माध्यम से आत्मज्ञान तथा परमात्मा ज्ञान के जरिए ईश्वरानुभूति कराना है। इससे मनुष्य के अन्दर व्याप्त बुराईयां समाप्त हो जाती हैं। हां, खासतौर पर इस संस्था का संचालन माताएं-बहनें ही करती हैं। पूरे विश्व की महिलाओं को उनके महान कर्तव्य के प्रति जागृत कर एक बेहतर समाज का निर्माण करना, इस संस्था का लक्ष्य है।

भारत में युवाओं की सोच और परंपराओं में पश्चिमी कल्चर का जो प्रभाव देखने को मिल रहा है, इसके बारे में आप क्या कहना चाहेंगी?

पश्चिमी देशों के प्रभाव से युवाओं में बदलाव चिंता का विषय है। हमारी संस्था में एक लाख पचास हजार से अधिक ऐसे युवा हैं, जिनके अन्दर कोई भी व्यसन, बुराई नहीं है। वे स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन का महान कार्य कर रहे हैं, अपने क्षेत्रों में सभ्यता और सुन्दर जीवन का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसे ही सारे युवाओं के अन्दर जागृति लाने की आवश्यकता है। इससे ही उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

आपको आध्यात्मिक और समाज सेवा का इतना लंबा अनुभव है। समाज में ऐसी कौन सी विकृति है, जिसे दूर करके देश उन्नति के मार्ग को प्रशस्त कर सकता है?

आज समाज भौतिक साधनों के क्षेत्र में दिनों-दिन तरक्की कर रहा है, परन्तु मानवीय मूल्यों के लगातार गिरावट से नयी-नयी समस्याओं का जन्म हो रहा है। समाज में सबसे बड़ी विकृति भेदभाव, हिंसा, आतंकवाद और व्याभिचार की है। जब तक समाज से यह समाप्त नहीं होगा, एक संपूर्ण और सर्वांगीण समाज का विकास नहीं हो सकता है। इसका समाधान एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना, आध्यात्मिकता के प्रति रूझान ही इन समस्याओं से मुक्ति दिला सकता है। इसके लिए सभी लोगों को मिलकर सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

योग, धर्म और आध्यात्म से कहां तक समाज में शांति और सुरक्षा लायी जा सकती है?

केवल सुख-सुविधाओं के विकास से ही समाज का विकास नहीं हो सकता। अब लोग वापस अपनी पुरातन संस्कृति की ओर लौटने लगे हैं, इसलिए योग तथा धार्मिक कार्यों में लोगों की रुचि बढ़ रही है, परन्तु केवल शारीरिक योग नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन के लिए सहज राजयोग को अपनाने की आवश्यकता है। इससे मनुष्य के अन्दर व्याप्त बुराईयां समाप्त हो जाती हैं और उनके अन्दर मूल्यों का समावेश होता है। इससे निश्चित तौर पर समाज में शांति आएगी और विकास होगा।

कीपर्स ऑफ विज़डम की आप मान्य सदस्या हैं। आपने इसके सहयोग से मानव आवास और पर्यावरण संबन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए किस तरह का कदम उठाया है?

कीपर्स ऑफ विज़डम से जुड़ने के कारण लोगों की समस्याओं का पता चलता है। इसके जरिए समाज में एकता, शांति और वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश सहज ही लोगों को मिल पाता है। आज पर्यावरण प्रदूषण से भी खतरनाक मन का प्रदूषण है और कहीं न कहीं मन के प्रदूषण का परिणाम ही पर्यावरण प्रदूषण है। यदि व्यक्ति का मन स्वस्थ, परोपकारी और हितकारी होता है तो अपने विनाश का सामान क्यों तैयार करता है? इसलिए पर्यावरण प्रदूषण से पहले मन के प्रदूषण को दूर करने की आवश्यकता है। बाकी जहां भी आपातकाल स्थितियां या प्राकृतिक आपदाएं आती हैं, संगठन के जरिए उन्हें पूरी मदद की जाती है। यह एक अच्छा मिशन है।

जो महिलाएं धर्म और आध्यात्म की ओर जाना चाहती हैं, उनके लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

आज पूरे विश्व की महिलाओं को आध्यात्मिक शक्तियों को अपनाकर शक्ति स्वरूपा बन पूरे विश्व से अत्याचार, भ्रष्टाचार और बुराईयों का सफाया करने के लिए आगे आना चाहिए, इसलिए वन्देमातरम् और भारत माता की जय कहा जाता है। बिना महिलाओं के उत्थान के समाज का उत्थान नहीं हो सकता, इसलिए पूरे विश्व की सभी माताओं व बहनों से अपील करती हूं कि यदि एक अच्छे समाज, परिवार व अच्छे राष्ट्र का निर्माण करना है तो आध्यात्मिक शक्तियों को अपनाते हुए परमात्मा के निर्देशन में, विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया में सहभागी बनें। यही ईश्वर का संदेश है।

■ **सुरभि आनंद** *(एसिस्टेंट एडीटर)*

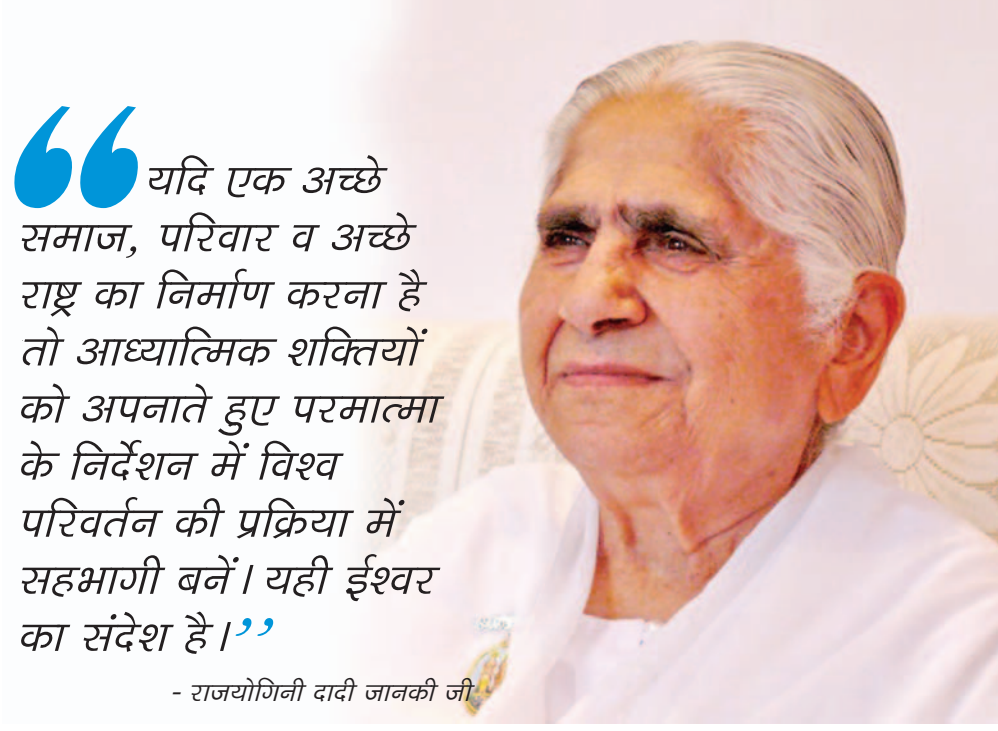

"यदि एक अच्छे समाज, परिवार व अच्छे राष्ट्र का निर्माण करना है तो आध्यात्मिक शक्तियों को अपनाते हुए परमात्मा के निर्देशन में विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया में सहभागी बनें। यही ईश्वर का संदेश है।"

- राजयोगिनी दादी जानकी जी